



Artistic Study Of The Clothing And Jewellery Of Gupta Period Statues Stored In The Government Museum Mathura

राजकीय संग्रहालय मथुरा में संग्रहीत गुप्तकालीन प्रतिमाओं के वस्त्राभूषण का कलात्मक अध्ययन

Dr. Sunita Gupta
Professor and H.O.D.
Dharm Samaj College,
Aligarh (INDIA)

Umesh Chandra
Research Scholar (Drawing &
Painting)
Dharm Samaj College, Aligarh
Dr. Bhimrao Ambedkar University,
Agra (INDIA)

ABSTRACT

English: The Gupta period sculptures stored in the Government Museum located in Mathura district of Uttar Pradesh state of India have been carved with great skill by the artists here. The main specialty of this period has been sculpture. The clothing of the Gupta period is light and flimsy. The quantity of Jewellery remains high. The marking of Belbute has been a specialty of the Gupta period. In the hands of skilled craftsman, the 'Clay and Stones' of this period have transformed into living statues of beauty.

Hindi: भारत के उत्तर प्रदेश राज्य के जनपद मथुरा में स्थित राजकीय संग्रहालय में संग्रहीत गुप्तकालीन मूर्तियों को यहाँ के कलाकार द्वारा बड़ी निपुणता से उकेरा गया है। इस काल की मुख्य विशेषता मूर्तिकला ही रही है। गुप्तकाल का वस्त्र-विन्यास हल्का व झीना है। आभूषणों की मात्रा अधिक रहती है। बेलबूटों का अंकन गुप्तकाल की विशेषता रही है। कुशल शिल्पी के हाथों में पड़कर इस काल की "मिट्टी और पत्थर" सौन्दर्य की जीती-जागती मूर्तियों में बदल गए हैं।

Keywords: मूर्ति, गुप्तकाल, वस्त्र, प्रतिमा, आभूषण

Idol, Gupta period, Vastra, Statue, Ornaments

प्रस्तावना :

भारत के उत्तर में स्थित मथुरा गुप्तकालीन मूर्तिकला का एक विशिष्ट केन्द्र रहा है। गुप्तराजवंश (लगभग 240/275–550 ई0) प्राचीन भारत का एक हिन्दू साम्राज्य रहा है, जिसने लगभग सम्पूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप पर शासन किया है। इस काल को भारत का स्वर्णयुग माना गया है। इस वंश के संस्थापक श्रीगुप्त थे। इस वंश के प्रमुख शासकों में चन्द्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त व चन्द्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य) प्रमुख शासक हुए।

गुप्तकाल में मथुरा में बुद्ध की सुन्दरतम प्रतिमाओं को उकेरा गया है। जिनमें आसनवाली, समभंग, आदमकद जिनके शरीर छरहरे, शिर पर घुंघराले बाल, पारदर्शी हल्की व महीन सलवटयुक्त सौल दर्शनीय है। गोल अलंकृत प्रभामण्डल युक्त शिव एवं विष्णु की विभिन्न प्रकार की प्रतिमाएं गढ़ी गयी हैं, जो कि मथुरा की विश्व को अमूल्य देन है।¹

मथुरा में बौद्ध की दैवीय प्रतिमाओं को गुप्तकाल में अधिक प्रसिद्धि मिली है। यहाँ प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण वस्त्र की धारियाँ जिनको गान्धार से लिया गया वे स्पष्टतः अंकित की गई हैं। शरीर की बनावट के समान कहीं-कहीं वस्त्र की बनावट दर्शनीय है।²

गुप्तकाल की मृण्मूर्तियाँ साँचे द्वारा बनती रहीं, लेकिन प्रतिमाओं में आध्यात्मिक एवं शारीरिक सौन्दर्य आदर्श रूप में दिखने लगा। अधखुली आँखें, लम्बे काले एवं संवरे केश इस समय की अपनी विशिष्टता रही है।³

गुप्तकालीन मिट्टी की मूर्तियाँ भारतीय मृण्मूर्ति कला के कीर्तिमान हैं। इस समय की मूर्तियाँ सजीव मौसल सौन्दर्य से पूर्ण एवं प्रभावशाली हैं। इनके चेहरों में हठ वक्राकार होने के कारण हल्की मुस्कुराहट लिए हुए हैं तथा इनके केशों की सज्जा बड़ी भव्य बन पड़ी है। शिर के पीछे प्रभामण्डल में दिव्य छटा को दर्शाया गया है एवं कहीं-कहीं इन्हें टेड़ी-मेड़ी अंगूर की बेल से आभूषित किया गया है।⁴

गुप्तकाल में शिल्पी ने सौन्दर्य को उकेरा है, उसकी कला का प्रमुख लक्ष्य रुढ़िवाद के घोर घातक बोझ से छुटकारा पाना तथा स्वच्छन्दता व सन्तुलन था।⁵

इसकाल में बुद्ध प्रतिमा का प्रभामण्डल अधिक अलंकृत होने लगा तथा कुषाणकाल की अपेक्षा विकसित कमल, पत्रावली, पुष्पमाला आदि अभिप्राय बनने लगे। घुंघराले केशों से अलंकृत मस्तक का स्थान अब बुद्ध के मण्डित मस्तक ने ले लिया।⁶

कान चेहरे व हाथों की बनावट में भी अन्तर दिखता है। कुषाण काल की उँगलियाँ मिली दिखती हैं, वहीं गुप्तकाल में एक-दूसरे से अलग दिखती हैं।⁷

मथुरा कला की प्रारम्भिक बुद्ध व बोधिसत्व की प्रतिमाएं गठी हुई प्रसन्न मुद्रा में हैं, जिनमें आध्यात्मिकता का आभास नहीं कराया गया है, लेकिन उत्तरकाल में इनमें सौन्दर्य एवं धार्मिकता का विकास हुआ है। माना जाता है कि मथुरा कला प्रारम्भिक भारतीय परम्परा की बहुत ऋणी रही है, इसने उत्तर पश्चिम का भी अनुकरण किया है व यूनानी चेष्टाओं को भी ग्रहण किया है। मथुरा कला द्वारा गुप्त शैली का विकास हुआ, जिसने भारत की कुछ महान प्रतिमाओं का सृजन किया।⁸

गुप्तकाल की प्रतिमाओं की विशेषताएं निम्नवत हैं –

- कुछ बुद्ध प्रतिमाओं तथा मथुरा की गुप्तयुगीन विष्णु प्रतिमाओं में (वर्तमान राष्ट्रीय संग्रहालय दिल्ली में हैं) आध्यात्मिक शान्ति, स्नेह, दया व खुशी झलकती है।
- पत्थर की प्रतिमाओं में आँखों की पुतलियाँ कम बनी हैं व आँखें अधखुली दर्शित हैं। यहाँ आँखों को गोल न बनाकर धनुषाकार भौहों के साथ कान तक फैल जाती हैं व आकार में लम्बी व कोनेदार दर्शाई गई हैं।
- कपोल चिकने, सीधी नाक, गड्ढेदार मोटे होठ बने हैं तथा कानों की बनावट में भी काफी अन्तर दिखता है।
- ऊर्णा चिन्ह अब विष्णु, इन्द्र, कार्तिकेय आदि प्रतिमाओं में दिखाई नहीं पड़ता है।
- बालों की सुन्दरतम बनावट दर्शनीय है।
- वस्त्रों को झीने व शरीर से चिपके दिखाया गया है।

गिराज सिंह (सहायक निदेशक, राजकीय संग्रहालय झांसी, 2013) से हुई वार्ता में बताया कि गुप्तकालीन प्रतिमाएं सुन्दर बनी हैं। इस काल को परिष्कृत काल भी कहा जाता है। इसमें आभूषणों की मात्रा बढ़ जाती है तथा बेलबूटों का अंकन इस काल की मुख्य विशेषता रही है। इस समय की प्रतिमाओं में पारदर्शी

वस्त्र अधिकतर बनने लगे। बालों को सुसज्जित किया जाने लगा तथा दो चोटियाँ बनाई जाने लगीं। प्रभामण्डल को अलंकृत किया जाने लगा।

मथुरा संग्रहालय में संग्रहीत गुप्तकालीन विशिष्ट प्रतिमाएं निम्नवत् हैं :-

1. “अभिलिखित पीठिका पर स्थापित बुद्ध की विशालकाय प्रतिमा”

यह विशाल प्रतिमा मथुरा संग्रहालय की वीधिका 9 में प्रवेश करते हुए सामने भगवान बुद्ध की प्रसिद्ध प्रतिमा (OO.A5) प्रदर्शित है। इसकी ऊँचाई 2 मीटर 20 सेमी० है। इसकी प्राप्ति कचहरी के समीप जमालपुर टीले से हुई है। इसका समयकाल लगभग पाँचवी शती ई० है।

यह प्रतिमा भारतीय कला की श्रेष्ठ कृतियों में मानी जाती है। गुप्तकालीन श्रेष्ठ शिल्पी यशदिन्न ने बड़ी ही कुशलता के साथ इस प्रतिमा की रचना की होगी। इस प्रतिमा में बुद्ध के नेत्र अर्द्ध कमल के समान हैं। सुन्दर घुंघराले बाल शोभनीय हैं। कान लम्बे बनाए गए हैं व झीना पारदर्शी वस्त्र उकेरा गया है। अनेक अलंकरणों से युक्त चारों तरफ बुद्ध के ज्ञान के प्रकाश की किरणों को बिखेरता अलंकृत प्रभामण्डल एवं सबसे उत्कृष्ट बुद्ध के ध्यान भाव का प्रदर्शन है।^{१०} बुद्ध की ज्ञानाग्नि में सभी विकारों के वशीभूत होने पर दिव्यलोक से मुखमण्डल आच्छादित हो उठा है। यह इतनी श्रेष्ठ प्रतिमा अचानक ही बनकर तैयार नहीं हुई इसके पीछे सैकड़ों वर्षों की तपस्या, श्रम व शिल्पियों का अनुभव रहा है।



Figure-1
“Standing Buddha Image in Abhayapose on an Inscribed Pedestal”
Accession No: OO.A5
Source-Photo by the Author from National Museum, Mathura



Figure-2
“Krishna Lifting Goverdhan Mound”
Accession No: OO.D.47
Source photo by the Author from National Museum, Mathura

2. गोवर्धनधारी कृष्ण

मथुरा संग्रहालय में संग्रहीत यह प्रतिमा गुप्तकालीन लगभग सातवीं शती ई० की है। इस प्रतिमा की ऊँचाई 1'8½" or OM.52 है। इस प्रतिमा की प्राप्ति गताश्रम नारायण मंदिर, मथुरा से हुई है।

इस प्रतिमा में भगवान कृष्ण अपने एक हाथ से गोवर्धन पर्वत को अपनी पूरी शक्ति के साथ उठाए दर्शनीय हैं, जबकि उनका दायां हाथ उनकी जांघ पर बलपूर्वक रखा हुआ है।¹⁰ वह एक लम्बी माला पहने हुए हैं, जो जांघों तक उत्कीर्णित है। एक दो मणियों की माला पीछे की तरफ से आती हुई बायीं भुजा के ऊपर से घुटनों तक जाती हुई उत्कीर्णित है। इनके दोनों हाथों की कलाई में एक लड़ी की माला पहने हुए हैं। कानों में भारी कुण्डल (पेंडेंट) पहिने हैं। इनके दोनों तरफ दो मानव आकृति बनी हैं, जो अनुमानतः ग्वाल-बाल हैं, इन ग्वाल-बालों के दोनों हाथ एक छड़ी पर टिके हुए हैं इनके ऊपर गायों का सुन्दर अंकन शोभनीय है।

3. सिर विहीन का धड़

गुप्तकालीन यह प्रतिमा राजकीय संग्रहालय मथुरा में संग्रहीत है। यह प्रतिमा मथुरा के जयसिंह पुरा से प्राप्त हुई है।

सिरविहीन यह कलाकृति गुप्तकाल की सुन्दरतम कृति है। इसके शरीर की रचना निपुणतापूर्वक की गई है और इसका वस्त्र-विन्यास बहुत ही सूक्ष्म है। इसके कन्धे पर लटकते घुंघराले बाल बहुत ही सुन्दर बने हैं। आभूषणों के लिए भी यह प्रतिमा विशिष्ट है। इसके गले में एकावली जिसे मोतियों द्वारा बनाया गया है। दूसरा चन्द्रहार है, जिसमें अनेक मणि व रत्न जड़े गए हैं। तीसरे आभूषण में दो मकर-मुखों से लड़ियाँ निकलती दिखाई गई हैं जिसे मकरी कहा जाता है। कमर की करधनी में मकर व अन्य प्रतीक बनाए गए हैं। घुटनों के नीचे तक जाती हुई वैजयन्ती माला से विदित होता है कि यह विष्णु भगवान की प्रतिमा है।



Figure-3
"Headless image of Vishnu"
 Accession No: 50.3532
 Source-Photo by the Author from
 National Museum, Mathura

4. यक्षी

मथुरा संग्रहालय में संग्रहीत गुप्तकालीन यह प्रतिमा महाविद्यादेवी मंदिर, मथुरा से प्राप्त हुई है।

यह प्रतिमा एक बैठी हुई यक्षी की है, जिसके हाथों प्याला है। यक्षियाँ यक्षों की पत्नियाँ हैं, जो अप्सराओं के समान सुन्दर होती थीं। हमारे समाज में बच्चों की संरक्षण देवी के रूप में भी इनको पूजने का प्रचलन प्राचीन समय देखा गया है।

इस मूर्ति के गले में एक सुन्दर हार दर्शनीय है। इसके बड़े-बड़े कान हैं। इसकी नाक और होठ खण्डित अवस्था में हैं। इसकी दोनों बाहों से होकर पीछे की तरफ

जाता हुआ धारीदार वस्त्र उत्कीर्णित है। इसके सजे संवरे बाल दर्शनीय हैं तथा बालों में पीछे की तरफ जूड़ा बंधा हुआ है। इस प्रतिमा का सादा प्रभामण्डल दर्शनीय है।

निष्कर्ष :

गुप्तकाल को प्राचीन भारत का क्लासिकल युग कहा गया है। यहाँ के शिल्पी द्वारा कला की विदेशी विधाओं का या तो परित्याग किया गया था या उनका भारतीयकरण करके आत्मसात कर लिया गया। गुप्तकाल में नए मापदण्ड व आदर्श स्थापित किए गए। सौन्दर्य की व्याख्या में विशेष बदलाव किया गया।

तत्कालीन प्रसिद्ध कवि कालिदास ने संकेत दिया कि रूप पाप वृत्ति के लिए नहीं है (न रूपं पाप वृत्तये) इस आदर्श ने प्रतिमाओं के निर्माण को बहुत प्रभावित किया।¹¹ फलतः स्त्री मूर्तियों का कामुक एवं नग्न प्रदर्शन अब संयम व मर्यादा में किया जाने लगा। शिल्पी ने बाह्य स्वरूप के साथ आन्तरिक भावनाओं के प्रदर्शन पर काफी ध्यान दिया। गुप्तकाल में बुद्ध मूर्ति का उद्देश्य दिव्यज्ञान की प्राप्ति रह गया। मथुरा के गुप्तकालीन शिल्पी द्वारा वस्त्र को हल्का व झीना उत्कीर्णित किया। बुद्ध के दोनों कन्धों पर संघाटी जिसमें चुन्नटें बड़ी एवं सुन्दर उकेरी गईं। यहाँ प्रभामण्डल को उत्कीर्णित पट्टियों से अलंकृत किया गया। बुद्ध के केश घुंघराले बने व कान, कंधे तक विशाल बनाए गए। इस काल की मुख्य विशेषता सौन्दर्य को आध्यात्म के साथ जोड़ दिया गया।



Figure-4 "Yakshi"
Accession No: 50.3549
Source-Photo by the Author from
National Museum, Mathura

में
से

REFERENCE:

1. प्रताप, रीता, (2011), भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, पृ० 457, प्रकाशक—राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
2. सिंह, शशि भूषण, (2009), सारनाथ की बौद्ध मूर्तिकला, स्वाति पब्लिकेशन्स, 34, सेंट्रल मार्केट, अशोक विहार, दिल्ली।
3. वर्मा, श्रीमती विमला, (2003), मथुरा संग्रहालय में संग्रहीत मृण्मय मूर्तिकला का विश्लेषणात्मक अध्ययन।
4. निगम, दिव्यशिखा, (1992), आभानेरी के मूर्ति शिल्प एक शैलीगत अध्ययन।
5. लूनिया, बी०एन०, (1978), भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति का विकास, पृ० 188, प्रकाशक—लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा—3
6. कैमरिच, स्टेला, (1933), इण्डियन स्कल्पचर्स, पृ० 63 प्रकाशक—वाई०एम०सी०ए० पब्लिशिंग हाउस, 5, रसैल स्ट्रीट कलकत्ता।
7. जोशी, एन०पी०, (1965), मथुरा की मूर्तिकला, पृ० 31, प्रकाशक—मथुरा संग्रहालय, मथुरा।
8. बाशम, ए०एल०, (1992), अद्भुत भारत, पृ० 307, प्रकाशक—शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, अस्पताल रोड, आगरा—3
9. शर्मा, रमेशचन्द्र, (1972), मथुरा संग्रहालय परिचय, पृ० 33, प्रकाशक—पुरातत्व संग्रहालय, मथुरा।
10. Sharma, R.C., (1976), Mathura Museum and Art, P.105, Publication-Government Museum, Mathura.
11. शर्मा, रमेशचन्द्र, (1972), मथुरा संग्रहालय परिचय, पृ० 34, प्रकाशक—पुरातत्व संग्रहालय, मथुरा।